JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

हरियाणा के हिन्दी कहानी साहित्य में चित्रित भारतीय संस्कृति

डॉ.मनजीत
सहायक प्राध्यापिका हिन्दी विभाग
वैश्य आर्य कन्या महाविद्यालय,
बहादुरगढ़ (हरियाणा)

साहित्य में राष्ट्रीयता की अवधारणा एक ऐसा प्रश्न है जिसको परिभाषा में बांधना उतना ही कठिन है जितना कि उन चार अन्धे व्यक्तियों के द्वारा हाथी के भिन्न–भिन्न अंगों को छूकर उसके सम्पूर्ण शरीर की व्याख्या करना रहा है। अतः राष्ट्रीयता की अवधारणा का फलक व्यापक एवं विस्तृत है जिसे एक निश्चित सूत्र में बांधना अत्यन्त दुष्कर है।

हरियाणा के हिन्दी कहानी साहित्य की यात्रा लगभग 100 वर्षों की यात्रा है। इन 100 वर्षों में हरियाणा का कहानीकार अपने देश के उन सभी संकटों एवं कष्टों का न केवल दृष्टा रहा है बल्कि भोगी भी रहा है जो उसने भोगे हैं, लेकिन गुलामी की चक्की में पिसने व तरह–तरह के उतार–चढ़ावों को झेलने पर भी राष्ट्रीयता की पहचान तनिक भी धूमिल नहीं हुई। इस सत्य का अवलोकन हरियाणा के कहानीकारों की दृष्टि से किया जा सकता है।

मानवतावाद भारतीय समाज की पहचान रही है 'जख्म अभी भरे नहीं' कहानी इस सत्य को प्रमाणित करती जान पड़ती है। कहानी का कथानक मानव का मानव के प्रति प्रेम को उजागर करते हुए जाति की दीवारों को खोखला सिद्ध करता है। कहानी का नायक वसीम मुसलमान है, लेकिन उसका दोस्त हिन्दू है। वे दोनों मज़हबी दीवारों को नहीं मानते ''मोहल्ले वालों ने कभी उन्हें महसूस ही नहीं होने दिया कि वे हिन्दू हैं या उनसे अलग। असलम चाचा ने भी उन्हें कभी बाऊजी की कमी महसूस नहीं होने दी। जब जिस वक्त सलाह–मशवरे, सिर पर हाथ, कन्धे को कन्धे की जरूरत पड़ी तो असलम चाचा को साथ खड़े पाया।''[1]

सहृदयता वह भाव है जो भारतीय संस्कृति की एक ऐसी पहचान है जिसने भारत को विश्व में एक नई पहचान दिलाई। यही सहृदयता की भावना हमें 'वसुदैव कुटुम्ब' की भावना की ओर अग्रसर करती है। डॉ. राजकुमार शर्मा ने 'मेरा चाँद आ गया' कहानी में दर्शाया है कि भारतीय फौज निर्दोष लोगों को सजा नहीं देती, चाहे वह पाकिस्तानी ही क्यों न हों और भले ही उन्होंने सीमा रेखा को लांघा हो। कहानीकार ने एक पाकिस्तानी व्यक्ति के माध्यम से इस तथ्य पर प्रकाश डाला है – ''नज़मा और नजीम की प्रेम कथा सुनकर कमाण्डर की आँखों में आँसू आ गए। वहाँ खड़े सभी सैनिकों की आँखे भी नम हो गई। उन्होंने एक ही स्वर में कहा, ये निर्दोष हैं, प्रेम–पूजारी हैं, माता की शरण में आए हैं, इन्हें जाने दो। नज़मा

ने उनका धन्यवाद किया और कहा, यदि मेरे देश में ही हम पकड़े जाते तो हम जीवित नहीं बचते। आप महान् हैं, आपका देश महान् है।''[2] इसी प्रकार सहृदयता की भावना भारतीयों में एक नया एवं अनोखा रिश्ता जोड़ती है, जो परस्पर सहयोग पर आधारित होता है। सहृदयता की इसी प्रकार की भावना कमल कपूर द्वारा रचित कहानी 'अंतहीन' में भी व्यक्त हुई है यथा – कहानी की नायिका अपनी माँ के तर्पण के लिए अपने पिता व भाई के साथ गंगा घाट जाती है, जहां वह देखती है कि लालची पाण्डे तर्पण के नाम पर एक गरीब बुढ़िया से सोने के गहने माँग रहे हैं। उस गरीब बुढ़ियां की बेटी को उसके सुसराल वालों ने मार डाला है। इसे देख कर नायिका कह उठती है, ''घाट पर भ्रमरों से मंडरा रहे पण्डों से मैंने कहा, मैं दिवंगता की बड़ी बहन हूँ, मैं फुल विसर्जित करवाऊँगी उसके। जो दान–दक्षिणा लेनी है, खुलकर लें, मैं दूंगी पर उनसे न मांगे। ..... ये बेचारे तो पहले ही गमों के मारे हैं। इस पर उसके पिता कहते है, ''विसर्जन तो उसके भाई ही करेंगे बेटा और खर्च मैं करूँगा। तुम्हारी बहन मेरी ही तो हुई ना? तो बाप के होते बहन क्यों करे ये काम?''[3]

इस प्रकार यह सहृदयता की भावना ही तो है जो खून के समस्त रिश्तों से ऊपर उठ कर परस्पर सहयोग की भावना की प्रेरणा देती है।

भारतीयों में देश प्रेम व बलिदान की भावना जन्मजात रूप से भरी हुई है। वे अपने देश के लिए अपना सर्वस्व त्यागने के लिए तत्पर रहते हैं। हरियाणा की कहानियों में इसके ज्वलंत उदाहरण मिलते है यथा – ''महात्मा गांधी ने अहिंसा का अस्त्र संभालकर भारत माँ को अंग्रेजों की कैद से छुड़ाने के लिए भारतीय लालों को पुकारा था। उनकी आवाज़ के साथ बड़े–बड़े पदाधिकारियों ने अपने पद से त्याग–पत्र देकर माँ को स्वतंत्र कराने का प्रण लिया। माँ, बहिने, बालिकाएँ खादी वस्त्र पहने सब ऐश्वर्य–सुख की बलि चढ़ाकर माँ को आजाद कराने, उसमें सहयोग देने के लिए चल पड़ी।''[4] इसी प्रकार विष्णु प्रभाकर की कहानी 'मेरा वतन' का नायक मिस्टर पुरी क्रूर साम्प्रदायिक शक्तियों का शिकार हो जाता है। उस क्षण वे राष्ट्र–प्रेम को मृत्यु से अधिक श्रेयस्कर सिद्ध करते हुए कहते हैं, ''मैं यहां से जा ही कहां सकता हूँ? यह मेरा वतन है, हसन। मेरा वतन..... ।''[5]

भारतीय लोगों में मानवता एवं विश्वबंधुत्व की भावना कूट–कूट कर भरी हुई है। वह विदेशियों पर भी उतना ही प्यार लुटाते हैं जितना की अपने सगे–सम्बन्धियों पर। इसी भावना को हरियाणा के साहित्यकारों ने अपनी कहानियों में व्यक्त किया है जैसे अमृतलाल मदान की कहानी 'टोपियाँ और कंटीली तारें' का नायक क्रिकेट देखने के बहाने पाकिस्तान घूमने जाता है तो वह पाकिस्तान की मुस्लिम महिला बुशरा के आतिथ्य सत्कार से इतना प्रभावित होता है और सोचता है कि पाकिस्तान और भारत के संबंध पहले जैसे मधुर हो जाएँ, ''मैंने सोचा कि काश कभी हमारे जीते जी वो दिन भी आ जाएँ जब क्रिकेट के बहाने नहीं, एक सांझी विरासत, सांझी बोली के अधिकारी इंसान होने के नाते आसानी से सीमा के आर–पार जा सकें, हमारा रास्ता न खाकी टोपियाँ रोक सकें, न कंटीली लहरदार तारें, चाहे हमारा मजहब कोई भी हो, क्षेत्र भी कोई और पॉलिटिकल ढाँचा भी कोई।[6]

ईमानदारी और सच्चरित्रता भारतीयता की पहचान रही है। भारतीय संस्कृति 'पर द्रव्येषु लोष्ठवत' का ातव, आदर–सत्कार, सहनशीलता के साथ पति व अन्य परिवार वालों के अत्याचारों को सहन करना नियति मानी जाती रही है। आज भी भारतीय समाज में ऐसी कितनी ही नारियाँ हैं जो भारतीयता की इस पहचान को आज भी अपनाएं हुए है। भारतीय नारी के इस गरिमामय रूप का वर्णन हरियाणा के हिन्दी कहानी साहित्य में बखूबी हुआ है। डॉ. राजकुमार शर्मा की कहानी 'किसान की बेटी' का यह उद्धरण दृष्टव्य है, ''जब वह साईकिल पर सवार होकर निकला ही था कि तेज वाहन ने उसे टक्कर मार दी थी और

वह जीवन–मृत्यु से जूझता हुआ दो मास पश्चात होश में आया था। कितना जोर दिया था भानुमति के परिजनों ने कि वह रिश्ता त्याग दें। उस समय तो रिश्ता कच्चा ही था। केवल तिलक ही किया गया था..... परन्तु उसने अपने परिजनों से स्पष्ट कह दिया था कि मेरे नाम का तिलक हो चुका था। यदि वे बच गए तो उन्हीं के साथ जीवन बिताऊँगी, नहीं तो मेरा भाग्य।[8] भारतीयता की असली पहचान यह है कि वह दूसरे की अच्छी बातों को अपने अन्दर समाहित कर लेती है और दूसरों पर अपना रंग इतना गहरा छोड़ती है कि वे भारतीयता में रमकर रह जाते है। डॉ. पुष्पा बंसल की कहानी 'सौभाग्यवती भवः' इसी तथ्य को व्यक्त करती है। कहानी की नायिका डौरोथी यद्यपि अमेरिकन है लेकिन वह भारतीय जीवन मूल्यों का सम्मान करती है तथा स्वयं भी वैसा ही बनना चाहती है, ''अचानक डौरोथी ने अपना स्कार्फ गले से खोला, उस सिर पर आँचल के समान ओढ़ा और झुककर नरेन के पाँव छू लिए। नरेन ने उसे बाहों में भरकर कहा, तुम तो भारतीय सोहागिन बन गई हो अमेरिकन रक्त।''[9]

इसमें कोई दो राय नहीं कि सहृदयता, ईमानदारी देश के लिए बलिदान की भावना, मर्यादित रूप, चरित्रता आदि अनेक ऐसी विशेषताएँ हैं जो भारतीय संस्कृति को विश्व स्तर पर एक अलग पहचान दिलाती हैं किन्तु हम इस सत्य से भी मुँह नहीं मोड़ सकते कि आज की भौतिकवादी प्रवृत्ति ने भारतीय मूल्यों पर भी प्रभाव छोड़ा है। जहां आर्थिक अभावों से ग्रस्त वर्तमान समाज में सामान्य परिवारों में नैतिक सामाजिक मूल्यों का खण्डन बड़ी तेजी से हो रहा है वहीं सम्पन्न वर्ग और अधिक सम्पन्न बनने व समाज में अपनी एक अलग पहचान बनाने की होड़ में भारतीयता की सारी सीमाएँ तोड़ता जा रहा है। आज अधिक से अधिक धन बटोरने व रातों–रात धनी होने की इच्छा ने सामान्य वर्ग के लोगों को इस कदर बना दिया कि भाई–भाई एवं पिता–पुत्र की सारे नैतिक मूल्यों को दरकिनार करकें एक दूसरे के खून के प्यासे हो गए हैं। इन सब पहलुओं को भी हरियाणा के कहानीकारों ने बड़े गहरे से छुआ है।

संदर्भ सूची

1- संपादन देश निर्मोही, हरिगंधा (अक्टूबर 2008), पृ. 127.

2- राजकुमार शर्मा, दलितों का गाँव, पृ. 68.

3- संपादक देश निर्मोही, हरिगंधा (जनवरी 2009), पृ. 54.

4- डॉ. इन्द्रा स्वप्न, वह शिल्पी था (साबुन वाला), पृ. 35.

5- विष्णु प्रभाकर, मेरा वतन, पृ. 13.

6- संपादक देश निर्मोही, हरिगंध (फरवरी 2008), पृ. 43.

7- विष्णु प्रभाकर, पूल टूटने से पहले, पृ. 18.

8- डॉ. राजकुमार शर्मा, जंगल में कैद अबला, पृ. 109.

9- डॉ. पुष्पा बंसल, रतिराग, पृ. 110.